यूजीसी द्वारा त्वरित और विस्तारित डिग्री कार्यक्रमों की शुरूआत शिक्षा में छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण को कैसे दर्शाती है? इस पहल के लाभों और चुनौतियों का मूल्यांकन करें।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने छात्रों को अपनी स्नातक डिग्री पूरी करने में अधिक लचीलापन प्रदान करने के लिए त्वरित और विस्तारित डिग्री कार्यक्रम शुरू किए हैं। यह पहल छात्रों को उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं और परिस्थितियों के आधार पर अपनी शैक्षणिक यात्रा को अनुकूलित करने की अनुमति देकर एक छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण को दर्शाती है1।

लाभ:

लचीलापन: छात्र अपनी व्यक्तिगत, शैक्षणिक या वित्तीय स्थितियों के आधार पर अपनी डिग्री पहले (त्वरित डिग्री कार्यक्रम) पूरी करना या अधिक समय लेना (विस्तारित डिग्री कार्यक्रम) चुन सकते हैं।

समावेशीपन: यह दृष्टिकोण अलग-अलग सीखने की क्षमताओं और प्रतिबद्धताओं वाले छात्रों को समायोजित करता है, जैसे कि अंशकालिक नौकरी या पारिवारिक जिम्मेदारियाँ।

एनईपी 2020 के साथ संरेखण: यह पहल राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के साथ संरेखित है, जो शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षा और कौशल विकास पर जोर देती है।

वैश्विक रुझान: यह भारत में उच्च शिक्षा को वैश्विक रुझानों के अनुरूप लाता है जहाँ लचीले शिक्षण पथों को तेजी से मान्यता मिल रही है।

समान मान्यता: त्वरित या विस्तारित समय-सीमा में पूरी की गई डिग्री को रोजगार और शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए मानक अवधि की डिग्री के बराबर माना जाता है।

चुनौतियाँ:

कार्यान्वयन: उच्च शिक्षा संस्थानों (HEI) को इन कार्यक्रमों को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए रूपरेखा और दिशानिर्देश विकसित करने की आवश्यकता है।

संसाधन आवंटन: संस्थानों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके पास इन लचीले कार्यक्रमों का समर्थन करने के लिए आवश्यक बुनियादी ढाँचा और शैक्षणिक संसाधन हैं।

निगरानी और मूल्यांकन: छात्र पात्रता का मूल्यांकन करने और प्रगति की निगरानी करने के लिए समितियों की स्थापना संसाधन-गहन हो सकती है।

धारणा: ऐसी धारणा हो सकती है कि त्वरित कार्यक्रम शिक्षा की गुणवत्ता से समझौता करते हैं, जिसे उचित संचार और गुणवत्ता आश्वासन उपायों के माध्यम से प्रबंधित करने की आवश्यकता है।

कार्यभार को संतुलित करना: यह सुनिश्चित करना कि त्वरित कार्यक्रमों में छात्रों को शैक्षणिक मानकों को बनाए रखते हुए अत्यधिक कार्यभार का सामना न करना पड़े।

कुल मिलाकर, यूजीसी की पहल उच्च शिक्षा को अधिक अनुकूलनीय और छात्र-अनुकूल बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।